मानव मन के गहरे अंधेरे कोनों की पड़ताल करता उपन्यास

पंकज सुबीर

हिन्दी कथा संसार का दायरा वैसे तो दिनों-दिन विस्तृत होता जा रहा है, फिर भी अभी कई विषय ऐसे हैं, जिन पर बहुत ज्यादा काम अभी तक सामने नहीं आया है। जबकि; इन्हीं विषयों पर विदेशों में बहुत काम हुआ है और अभी भी हो रहा है। नई सदी में हिन्दी कथा साहित्य ने कई नए विषयों की ज़मीनें तोड़ कर वहाँ कहानियों और उपन्यासों की फ़सल उगाई है। कई ऐसे विषय जिन पर पहले बहुत कम बात की जाती थीं, गिने-चुने उदाहरण जिनके मिलते थे, अब उन विषयों पर बहुत काम हो रहा है और लगभग अछूत समझे जाने वाले उन विषयों को नई सदी में सामने आए लेखक ख़ूब उठा रहे हैं। नई सदी का साहित्य एकदम नए नज़रिये का साहित्य है, जिसमें कहीं किसी भी विषय से परहेज़ करने वाली बात दिखाई नहीं देती है। शोध करके लिखने की प्रवृत्ति भी इधर काफी दिखाई देती है। क्योंकि; इंटरनेट के कारण शोध कार्य में कुछ आसानी हो गई है। इन दिनों जो उपन्यास सामने आ रहे हैं, वह बहुत अध्ययन और शोध से उपजे हुए होते हैं, उनके पीछे किया गया परिश्रम साफ दिखाई देता है।

सुधा ओम ढींगरा का अधिकांश महत्त्वपूर्ण लेखन नई सदी में ही सामने आया है तथा उनकी महत्त्वपूर्ण तथा चर्चित किताबें भी नई सदी में ही सामने आई हैं। इसीलिए उनको नई सदी में सामने आई कथा-पीढ़ी के साथ ही रेखांकित करना होगा। हिन्दी में कथा-समय से ज्यादा वरिष्ठ-कनिष्ठ के दायरों में काम होता है, जो ठीक नहीं है। असल में एक कथा-समय को ही रेखांकित किया जाना चाहिए। उस कथा-समय में सक्रिय कौन था, कौन अपने समय के परिवर्तनों पर नज़र रखे हुए था, तथा उसकी रचनाओं में उस परिवर्तन की आहट महसूस हो रही थी या नहीं; यह सब देखा जाना बहुत ज़रूरी है। कई सारे वरिष्ठ लेखक ऐसे हैं, जिनकी शैली, शिल्प तथा विषयों में नवीनता दिखाई दे रही है, जबकि कई युवा लेखक ऐसे हैं, जो पारंपरिक ढर्रे पर ही चल रहे हैं, ऐसे में आप नए कथा-समय की बात करते समय किसको उसमें शामिल करोगे। उस लेखक को जो नया है या उस लेखक को जिसका लेखन नया है?

यह उपन्यास 'दृश्य से अदृश्य का सफ़र' मानव मन के गहरे अँधेरे कोनों की पड़ताल की कहानी है। सुधा ओम ढींगरा ने कुछ नए पन्नों को हिन्दी पाठक के सामने खोलने का कार्य इस उपन्यास के माध्यम से किया है। यह भी संयोग है कि कोरोना की पहली लहर के बाद लिखा गया यह उपन्यास जब सामने आया, तब भारत दूसरी लहर की भयावहता से जूझ रहा था। हिन्दी में इस तरह के प्रयोग और होते रहें इसके लिए आवश्यक है कि इस तरह के प्रयोगों का स्वागत किया जाए। इस तरह की कृतियाँ जो एकरसता को तोड़ती हैं और कुछ नई दिशाओं की खिड़कियाँ खोलती हैं, इनके स्वागत करने से आने वाले समय में इस प्रकार के और प्रयोग सामने आएँगे। यह उपन्यास एक यात्रा है, उस अज्ञात की यात्रा, जो कुहासे में छिपा हुआ अज्ञात है। लेखक ने अपनी भाषा और शैली से इस यात्रा को दिलचस्प और रोचक बना दिया है।

समीक्षित कृति- *दृश्य से अदृश्य का सफ़र (उपन्यास)*
लेखिका – सुधा ओम ढींगरा, मूल्य – 150 रुपये,
प्रकाशन वर्ष – 2021, पृष्ठ – 152
प्रकाशक – शिवना प्रकाशन, सीहोर, म.प्र., 466001,
समीक्षक का पता- *सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, म.प्र., 466001*
मो. 9977855399

❐❐